ISSN 2349-3887

दोआबा

समय से संगत

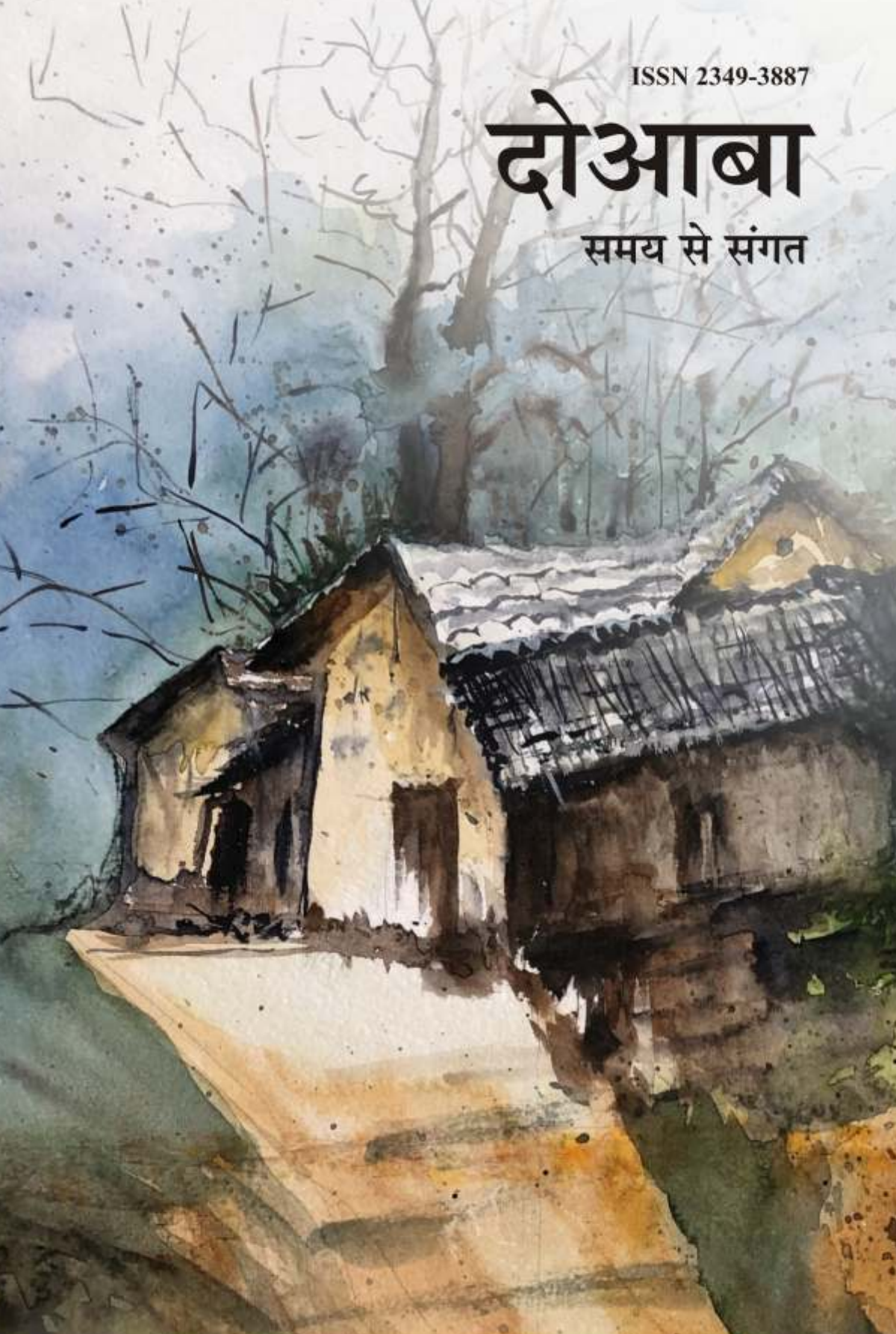

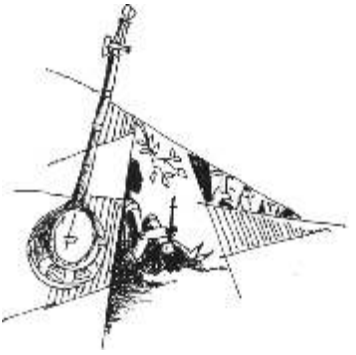

उस रात ऐसा कुछ हुआ था

पहाड़ की चोटियां छोटी पड़ गई थीं उस रात
जब तराई में हुसेन इब्न सैफ़ ने
रेत के ढेर पर अपना ख़ेमा लगाया था

जब सामने वाले टीले पर खड़ी हवेली में
उसने ताक़ पर मोम के दिए जलाए थे

जब बरसों बरस से रौशनदान के शीशों पर
जमीं धूल साफ़ की थी उसने

जब दीवारों के दरम्यान बनी भट्ठियों के
ताप से गुज़र कर गरम पानी के स्रोतों में
दोबारा पानी की लहरें बहाई थीं

जब, पत्थरों के बीच, आग जलाकर
मकई की रोटियां सेकी थीं उसने और
केले के पत्ते में कुछ जंगली फल
सजाकर पहाड़ की उस गुफ़ा तक गए थे
जहां वो बुजुर्ग सूफ़ी सजदे में गिरा था

जब किसी पहाड़ी झरने से मीठा
पानी लेकर सजदे में गिरे सूफ़ी के
आगे रख आए थे

तब पहाड़ की चोटियां हुसेन इब्न सैफ़ के
सामने छोटी पड़ गई थीं

'सूखे पत्तों के रंग' से

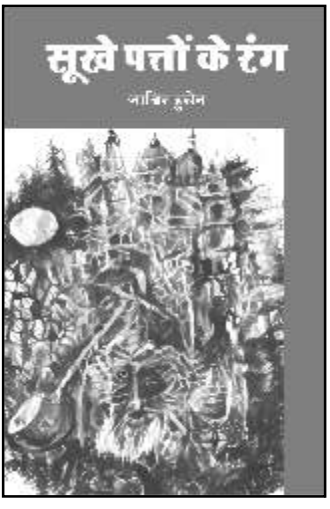

अप्रैल-जून 2023

दोआबा

समय से संगत

दोआबा

समय से संगत

अप्रैल-जून 2023
वर्ष 17 : अंक 45

आवरण चित्र : अमृता सिन्हा *(मुम्बई)*
रेखांकन : अनुप्रिया *(फरीदाबाद)*

मानद सहयोग

शहंशाह आलम
लता प्रासर, पवन कुमार, जावेद एक़बाल

प्रबंध

मोनिश हुसेन

कार्यालय : सुनील हेम्ब्रम

संपर्क
247 एम आई जी
लोहियानगर, पटना - 800 020
e-mail : doabapatna@gmail.com
मो.-08409044236

सर्वाधिकार सुरक्षित

पाकीज़ा ऑफसेट
शाहगंज, पटना-800 006
मो.-09334116542

मूल्य : ₹ 150/- (डाक खर्च अलग)

रचनाओं में अभिव्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।
संपादक का इन विचारों से सहमत होना ज़रूरी नहीं।

संपादक : **जाबिर हुसेन**
मो.-09431602575

अप्रैल-जून 2023

दोआबा

समय से संगत

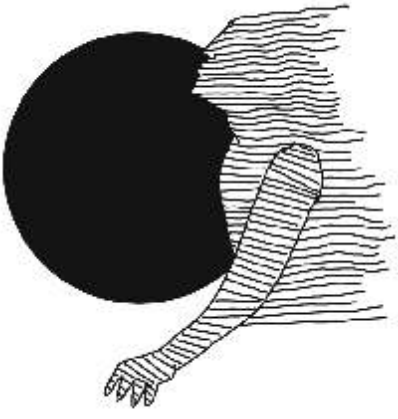

अनुक्रम

जाबिर हुसेन : अपनी बात / 05

ज़िंदा यादें

मधुरेश : संग-साथ - दो / 08

रचना समय

गोपाल माथुर : छत पर पसरा सन्नाटा / 30
शहंशाह आलम : जिन्ना फ़्रॉम बनारस / 63
देवेश पथ सारिया : कजोड़ / 71
पारुल हर्ष बंसल : और दीप जल उठा / 76
पूनम शुक्ला : और समुद्र ग़ायब था / 83

कविता समय

अंतरा श्रीवास्तव / *कवर*
जावेद आलम ख़ान / 89
सुभाष मुखोपाध्याय *(अनुवाद : रोहित प्रसाद पथिक)* / 90
राजेन्द्र उपाध्याय / 93
अनिल विभाकर / 96
राहुल राजेश / 100
शंकरानंद / 103
अंजन कुमार / 106
आशा सिंह सिकरवार / 108
अनामिका चक्रवर्ती / 111
वंदना गुप्ता / 113
मंगला रानी / 114
सत्या शर्मा 'कीर्ति' / 116

संवाद

शकील सिद्दीक़ी : दहन (हरियश राय) / 120
अवध बिहारी पाठक : तीसरे पहर की स्मृतियां (जाबिर हुसेन) / 124
शहंशाह आलम : तीसरे पहर की स्मृतियां (जाबिर हुसेन) / 125
सुरेन्द्र किशोर : राजनीति को नुकसान, साहित्य को लाभ / 130
सरला माहेश्वरी : वैसी आग मैंने पहले नहीं देखी / 132
प्रीति सिन्हा : उत्कृष्ट रचनाओं से भरा अंक / 136

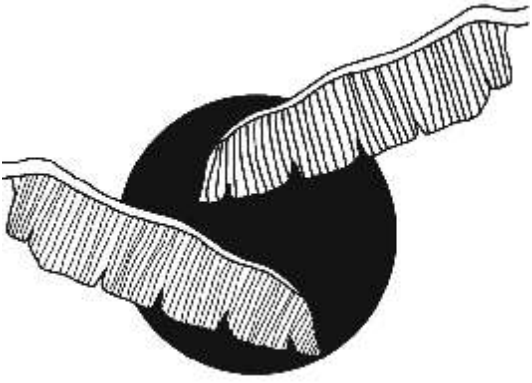

जाबिर हुसेन

सामाजिक चेतना को विस्तार देती आत्मकथा

अचानक एक दिन, डाक से आलोक कुमार सातपुते की आत्मकथा की दो जिल्दें प्राप्त हुईं। शीर्षक ने चौंका दिया। पहली जिल्द का शीर्षक था : छूने से बिखर जाऊंगा। दूसरी जिल्द पर लिखा था : ख़त खुला रहने दिया।

बारी-बारी इन्हें पढ़ना शुरू किया तो लगा जैसे किसी गुमनाम ज़िंदगी की तल्ख़ियों के सागर में डूब रहा हूं। ये तल्ख़ियां मेरी ज़िंदगी की राहदारियों से गुज़रनेवाली नहीं थीं। इनकी लहरें लेखक आलोक कुमार सातपुते की तारीक ज़िंदगी के किनारों को स्पर्श करनेवाली थीं।

दोआबा के वर्तमान अंक में कहीं आपको सातपुते की इन्हीं दो जिल्दों के कुछ अंश पढ़ने को मिलेंगे। इनसे शायद मेरी बात कुछ हद तक स्पष्ट हो सकेगी।

आत्मथा की कुछ पंक्तियां पढ़ने के बाद मैंने फ़ोन पर सातपुते से संपर्क किया। जो पहली छाप इन पुस्तकों ने मेरे दिल-दिमाग पर बनाई थी, उसे उन तक पहुंचाने के लिए। मैंने महसूस किया कि यह छाप अपनी पूरी जीवंतता के साथ उनकी वाणी में भी मौजूद थी।

फिर तो आत्मकथा के पन्ने उलटते गए, और कथ्य की बेचैन करनेवाली सच्चाई अपनी